भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान दिल्ली
पाक्षिक समाचार

सम्पर्क

आज़ादी का अमृत महोत्सव

खण्ड–XXVII अंक–01 15 जनवरी, 2022

व्यासप्रसादाच्छ्रुतवानेतगुद्ह्यमहं परम। योगं योगेश्वरात्कृष्णात्साक्षात्कथयतः स्वयम।।

श्री व्यास जी की कृपा से दिव्य दृष्टि पाकर मैंने इस परम गोपनीय योग को अर्जुन के प्रति कहते हुए स्वयं योगेश्वर भगवान् श्रीकृष्ण से प्रत्यक्ष सुना। **श्रीमद्भगवद्गीता 18/75**

स्वागत

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/2021/378319 दिनांक 13.12.2021 के अनुसार **डॉ. (सुश्री) नैनी बजाज** ने 1.12.2021 से संस्थान के भौतिकी विभाग में पोस्ट डॉक्टरल फेलो के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/U-3/2021/380243 दिनांक 17.12.2021 के अनुसार **डॉ. अरुनभ बनर्जी** ने 15.12.2021 से संस्थान के ट्रिप केन्द्र में पोस्ट डॉक्टरल फेलो के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/377678 दिनांक 9.12.2021 के अनुसार **प्रो. सुमित सिन्हा रे** ने 8.12.2021 से संस्थान के वस्त्र एवं रेशा इंजीनियरी विभाग में सातवें वेतन आयोग के लेवल–12 में सहायक प्रोफेसर ग्रेड–I के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/380958 दिनांक 20.12.2021 के अनुसार **प्रो. गौरब घटक** ने 15.12.2021 से संस्थान के विद्युत इंजीनियरी विभाग में सातवें वेतन आयोग के लेवल–11 में सहायक प्रोफेसर ग्रेड–II के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

प्रो. गौरब घटक को उनकी नियुक्ति से तीन वर्ष की अवधि अथवा वेतन लेवल 13ए1 प्राप्त करने तक (जो भी पहले हो) के लिए संस्थान द्वारा प्रायोजित ''युवा संकाय प्रोत्साहन फेलोशिप'' भी प्रदान की गई है।

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/U-3/2021/379953 दिनांक 16.12.2021 के अनुसार **प्रो. सरन कुमार** ने 13.12.2021 से संस्थान के कुसुमा जैव विज्ञान स्कूल में सातवें वेतन आयोग के लेवल–12 में सहायक प्रोफेसर ग्रेड–I के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

प्रो. सरन कुमार को उनकी नियुक्ति से तीन वर्ष की अवधि अथवा वेतन लेवल 13ए1 प्राप्त करने तक (जो भी पहले हो) के लिए संस्थान द्वारा प्रायोजित ''युवा संकाय प्रोत्साहन फेलोशिप'' भी प्रदान की गई है।

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/U-3/2021/382141 दिनांक 23.12.2021 के अनुसार **प्रो.शाहिद मलिक** ने 20.12.2021 से संस्थान के संवेदक उपकरण और साइबर भौतिक सिस्टम इंजीनियरी केन्द्र (SeNSE) में सातवें वेतन आयोग के लेवल–10 में सहायक प्रोफेसर ग्रेड–II के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

प्रो. शाहिद मलिक को उनकी नियुक्ति से तीन वर्ष की अवधि अथवा वेतन लेवल 13ए1 प्राप्त करने

सम्पादकीय

नववर्ष कैलेण्डर एक सार्थक संदेश–''होलिस्टिक दृष्टि व जीवन शैली के द्वारा विश्वशान्ति की प्रबल सम्भावना.....'' के साथ आपकी सेवा में हिंदी कक्ष ने प्रस्तुत किया। समस्त भारत आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है। हमारा संस्थान भी इस दिशा में उत्साह के साथ कदम बढ़ा रहा है। इस संदर्भ में निदेशक महोदय द्वारा गठित समिति ने विभिन्न गतिविधियाँ प्रस्तावित की हैं। इनमें पारम्परिक ज्ञान व्यवस्था एवं टैक्नोलोजी (Traditional Knowledge System and Technologies), लोक विद्या आदि कार्यक्रम परिसरवासियों के लिये रुचिकर रहेंगे, ऐसी आशा है। हिन्दी कक्ष 'तकनीकी अन्तर्दृष्टि' की दिशा में 'सम्पर्क' के माध्यम से प्रयासरत है। इस अंक में दैनिक जागरण में प्रकाशित लेख ''दुनिया को नयी दृष्टि देने वाले विवेकानन्द''– समसामयिक है, भारत वर्ष के प्राचीन ज्ञान विज्ञान के गौरव का दिग्दर्शन है।

आइये मिलकर 'आज़ादी का अमृत महोत्सव' के लिये निदेशक महोदय की vision व सपने को साकार करें।

–प्रो. सन्तोष सत्या

तक (जो भी पहले हो) के लिए संस्थान द्वारा प्रायोजित ''युवा संकाय प्रोत्साहन फेलोशिप'' भी प्रदान की गई है।

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/381330 दिनांक 21.12.2021 के अनुसार **प्रो. सौरभ राजेन्द्र गाँधी** ने 16.12.2021 से संस्थान के विद्युत इंजीनियरी विभाग में सातवें वेतन आयोग के लेवल–11 सहायक प्रोफेसर ग्रेड–II के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

  प्रो. सौरभ राजेन्द्र गाँधी को उनकी नियुक्ति से तीन वर्ष की अवधि अथवा वेतन लेवल 13ए1 प्राप्त करने तक (जो भी पहले हो) के लिए संस्थान द्वारा प्रायोजित ''युवा संकाय प्रोत्साहन फेलोशिप'' भी प्रदान की गई है।

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/U-3/2022/1619 दिनांक 7.1.2022 के अनुसार **प्रो. मनीष कुमार** ने 3.1.2022 से संस्थान के संवेदक उपकरण और साइबर भौतिक सिस्टम इंजीनियरी केन्द्र (SeNSE) में सातवें वेतन आयोग के लेवल–12 में सहायक प्रोफेसर ग्रेड–I के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

  प्रो. मनीष कुमार को उनकी नियुक्ति से तीन वर्ष की अवधि अथवा वेतन लेवल 13ए1 प्राप्त करने तक (जो भी पहले हो) के लिए संस्थान द्वारा प्रायोजित ''युवा संकाय प्रोत्साहन फेलोशिप'' भी प्रदान की गई है।

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/1612 दिनांक 1.1.2022 के अनुसार **प्रो. श्रेयम सिन्हा** ने 29.12.2021 से संस्थान के विद्युत इंजीनियरी विभाग में सातवें वेतन आयोग के लेवल–11 में सहायक प्रोफेसर ग्रेड–II के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

  प्रो. श्रेयम सिन्हा को उनकी नियुक्ति से तीन वर्ष की अवधि अथवा वेतन लेवल 13ए1 प्राप्त करने तक (जो भी पहले हो) के लिए संस्थान द्वारा प्रायोजित ''युवा संकाय प्रोत्साहन फेलोशिप'' भी प्रदान की गई है।

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/U-3/2021/384063 दिनांक 30.12.2021 के अनुसार **श्री विक्रम मधुवदन मेहता** ने 6.9.2021 से तीन माह की अवधि के लिए संस्थान के वायुमण्डलीय विज्ञान केन्द्र में विजिटिंग प्रोफेसर के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

पुनर्नियुक्ति

- **प्रो. हरपाल सिंह** (जैव चिकित्सा इंजीनियरी केन्द्र) को संस्थान संविधि के पैरा 13 (2) के अनुसार वर्तमान शैक्षिक सत्र के अंत तक अर्थात् 30.6.2022 तक के लिए जैव चिकित्सा इंजीनियरी केन्द्र में प्रोफेसर के रूप में पुनर्नियुक्त किया गया है।

त्यागपत्र स्वीकृत

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/2021/382375 दिनांक 24.12.2021 के अनुसार **प्रो. मधुरेश सुमित,** सहायक प्रोफेसर ग्रेड–I (जैव रासायनिक इंजीनियरी एवं जैव प्रौद्योगिकी विभाग) ने अपने पद से त्यागपत्र का अनुरोध किया था जिसे सक्षम प्राधिकारी ने 31.12.2021 से स्वीकार कर लिया है। अतः प्रो. मधुरेश सुमित 31.12.2021 को संस्थान कार्य से मुक्त हो गए है।

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/U-1/382292 दिनांक 24.12.2021 के अनुसार **प्रो. शशि माथुर,** प्रतिष्ठित प्रोफेसर (सिविल इंजीनियरी विभाग) ने अपने पद से त्यागपत्र का अनुरोध किया था जिसे सक्षम प्राधिकारी ने 1.1.2022 से स्वीकार कर लिया है। अतः प्रो. शशि माथुर 1.1.2022 को संस्थान कार्य से मुक्त हो गए है।

- स्थापना अनुभाग–II से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/E-2/2021/370966 दिनांक 16.11.2021 के अनुसार **श्री प्रशांत,** कनिष्ठ सहायक (स्थापना अनुभाग–I) ने अपने पद से त्यागपत्र का अनुरोध किया था जिसे सक्षम प्राधिकारी ने 17.11.2021 से स्वीकार कर लिया है। अतः श्री प्रशांत 17.11.2021 को संस्थान कार्य से मुक्त हो गए है।

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/U-4/382585 दिनांक 29.12.2021 के अनुसार **डॉ. अनिरुद्ध नाथ,** पोस्ट डॉक्टरल फेलो (विद्युत इंजीनियरी विभाग) ने अपने पद से त्यागपत्र का अनुरोध किया था जिसे सक्षम प्राधिकारी ने 20.1.2022 से स्वीकार कर लिया है। अतः डॉ. अनिरुद्ध 20.1.2022 को संस्थान कार्य से मुक्त होंगे।

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/U-3/2021/381809 दिनांक 23.12.2021 के अनुसार **डॉ. सी. उपेंद्र रेड्डी,** पोस्ट डॉक्टरल फेलो [ऑटोमोटिव अनुसंधान एवं ट्राइबोलॉजी केन्द्र (कार्ट)] ने अपने पद से त्यागपत्र का अनुरोध किया था जिसे सक्षम प्राधिकारी ने 23.12.2021 से स्वीकार कर लिया है। अतः डॉ. सी. उपेंद्र रेड्डी 23.12.2021 को संस्थान कार्य से मुक्त हो गए है।

- स्थापना अनुभाग–II से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/E-2/2021/383637 दिनांक 29.12.2021 के अनुसार **श्री विवेक कुमार सिंह,** वरिष्ठ प्रयोगशाला सहायक (रसायनिक इंजीनियरी विभाग) ने अपने पद से त्यागपत्र का अनुरोध किया था जिसे सक्षम प्राधिकारी ने 30.12.2021 से स्वीकार कर लिया है। अतः श्री विवेक 30.12.2021 को संस्थान कार्य से मुक्त हो गए है।

राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन के लिए आई.टी. टूल्स एवं सॉफ्टवेयर विषय पर कार्यशालाः एक रिपोर्ट

भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुसरण में गृह मंत्रालय द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम के अनुसार राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को सरल बनाने के लिए **24 दिसम्बर, 2021 (शुक्रवार)** को संस्थान में ''राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन के लिए आई.टी. टूल्स एवं सॉफ्टवेयर'' विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में संस्थान के 35 स्टाफ सदस्यों एवं प्रशासनिक अधिकारियों ने भाग लिया। इस कार्यशाला को प्रारम्भ करते हुए श्रीमती इन्द्रमणि ने आदरणीय उप निदेशक (प्रचालन), अध्यक्ष, हिन्दी कक्ष, सहायक कुलसचिव (हिन्दी कक्ष), अतिथि वक्ता श्री केवल कृष्ण तथा कार्यशाला में भाग लेने वाले सभी अधिकारियों एवं स्टाफ सदस्यों का हार्दिक स्वागत करते हुए अध्यक्ष, हिन्दी कक्ष को कार्यशाला का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत करने का अनुरोध किया। डॉ. नीरज चौरसिया ने उप निदेशक (प्रचालन) एवं आमंत्रित वक्ता श्री केवल कृष्ण तथा उपस्थित प्रतिभागियों का स्वागत किया। आपने कार्यशाला की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालते हुए बताया कि कोविड–19 महामारी के कारण अभी तक ऑनलाइन कार्यशाला आयोजित की जा रही थी परन्तु यह कार्यशाला प्रत्यक्ष रूप से आयोजित की जा रही है। इस प्रकार की कार्यशाला हिन्दी कक्ष पहले भी आयोजित कर चुका है, निश्चित रूप सें स्टाफ व अधिकारी उनसे लाभान्वित हुए होंगे। आज की इस कार्यशाला में प्रशासनिक कार्यों में दिन–प्रतिदिन आने वाली समस्याओं का समाधान ढूंढ़ने का प्रयास करेंगे तथा कुछ नया भी सीखेंगे।

इसके उपरान्त डॉ. चौरसिया ने सभी का कार्यशाला में स्वागत करते हुए श्री केवल कृष्ण को समय देने के लिए धन्यवाद दिया। आपने कहा कि जैसे कार्यशाला के शीर्षक **''राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन के लिए आई.टी. टूल्स एवं सॉफ्टवेयर''** से ही स्पष्ट है कि राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को सरल बनाने के लिए किए जा रहे आई.टी. टूल्स को कैसे प्रभावी रूप से उपयोग किया जा सकता है इस विषय पर आप सभी जानकारी प्राप्त करेंगे। अतिथि वक्ता का भाषा व तकनीकी के क्षेत्र में 35 वर्षों से अधिक का अनुभव रहा है।

अध्यक्ष, हिन्दी कक्ष ने प्रो. एस.जी. देशमुख, उप निदेशक (प्रचालन) को उनकी व्यस्त प्रशासनिक दिनचर्या से समय निकालकर कार्यशाला की अध्यक्षता के लिये तथा हिन्दी कक्ष के सतत् सहयोग व मार्गदर्शन प्रदान करने के लिए धन्यवाद दिया और उनको अध्यक्षीय संबोधन के लिए आमंत्रित किया। उप निदेशक महोदय ने कहा कि वास्तव में तकनीकी ने आज हिन्दी में कार्य करने को काफी आसान बना दिया है। तकनीकी व अन्य ई–टूल्स के माध्यम से टाइपिंग, अनुवाद तथा अन्य कार्य काफी सुविधाजनक तरीके से किये जा सकते हैं। आज के हमारे अतिथि वक्ता जिनका इस क्षेत्र में काफी अनुभव है इनके अनुभव का लाभ निश्चित ही आप सभी को मिलेगा। उन्होंने हिन्दी कक्ष को इस तरह की कार्यशालाओं के आयोजन करने के लिए धन्यवाद दिया। इसके उपरांत डॉ. चौरसिया ने अतिथि वक्ता श्री केवल कृष्ण जी, का संक्षिप्त परिचय देते हुए उन्हें आमंत्रित किया।

श्री केवल कृष्ण जी ने सभी को धन्यवाद दिया तथा अत्यन्त ही सरल तरीके से अंग्रेजी माध्यम से कम्प्यूटर में हिन्दी टाइपिंग करने के बारे में बताया। सभी प्रतिभागियों ने इसका प्रैक्टिकल भी करके देखा। आपने यूनिकोड तथा गूगल के माध्यम से बोलकर टाइपिंग (Voice Typing) करने एवं अनुवाद व टाइपिंग, फोनेटिक एवं रेमिंग्टन टाइपिंग के विषय में जानकारी दी तथा प्रतिभागियों की समस्याओं को दूर कर तकनीकी पहलुओं पर प्रकाश डाला। अन्त में श्री आनंद प्रकाश, सहायक कुलसचिव (हिन्दी कक्ष) ने कहा कि आज सभी को बहुत कुछ सीखने का मौका मिला है हम केवल कृष्ण जी के आभारी हैं। अब कोई कारण नहीं कि नोटिंग, ड्राफ्टिंग तथा अन्य कार्य हिन्दी में न हो सके । उन्होंने सभी प्रतिभागियों, हिन्दी कक्ष के स्टाफ सदस्यों एवं अध्यक्ष, हिन्दी कक्ष को धन्यवाद देते हुए कार्यशाला का समापन किया।

दुनिया की दृष्टि बदलने वाले विवेकानंद

समकालीन विश्व इतिहास में 11 सितंबर, 1893 का दिन एक युगांतकारी परिघटना का पड़ाव बना था। उस दिन शिकागो शहर में आयोजित विश्व धर्म सम्मेलन के मंच से स्वामी विवेकानंद ने भारतीय धर्म–संस्कृति का ऐसा शंखनाद किया कि सुनने वाले सम्मोहित होकर रह गए। उन श्रोताओं में जर्मन भाषाविद् और प्राच्य विद्या के मर्मज्ञ प्रोफेसर फ्रेडरिक मैक्समूलर और अल्बर्ट आइंस्टीन जैसे मूर्धन्य विज्ञानी भी थे। स्वामी जी के विचार सुनकर भारत को देखने की पश्चिमी विद्वानों की दृष्टि ही बदल गई कि जिसे वे जादू–टोना और सपेरों का देश समझते रहे, वह तो ज्ञान–विज्ञान, दर्शन और साहित्य की अविरल धारा को समेटे है। स्वामी विवेकानंद मानते थे कि, 'संसार भारत माता का अपार ऋणी है। यदि हम विश्व के सभी राष्ट्रों का तुलनात्मक अध्ययन करें तो पाते हैं कि विश्व में ऐसी कोई जाति नहीं है, जिसका संसार उतना ऋणी है, जितना वह हमारे भद्र हिंदू पूर्वजों का है।'.....इसी कड़ी में मैक्समूलर ने स्वामी जी को अपने यहां भोजन पर आमंत्रित किया। यह 28 मई, 1896 की तिथि थी। मैक्समूलर से घंटों शास्त्रार्थ हुआ।..... इस प्रकार विवेकानंद और मैक्समूलर का मिलन वास्तव में पूरब और पश्चिम का सेतुबंधन था।.....मैक्समूलर ने तीन दशक से भी अधिक समय वेदों पर अध्ययन और शोध किया।..... यह पश्चिम में वैदिक ज्ञान की 'दिग्विजय यात्रा' थी। यह संपूर्ण यूरोप में वैदिक ज्ञान के प्रति आए पुनर्जागरण का उत्कर्ष था।..... भारत और भारतीय संस्कृति से उनके अनुराग की अभिव्यक्ति इन्हीं शब्दों में समझी जा सकती है, 'भारत आधुनिक विश्व का आध्यात्मिक पूर्वज है और जिस देश ने राम और कृष्ण को जन्म दिया, उसे गुलाम बनाना महापाप है।' ..... 'इंडियाः व्हाट इट कैन टीच अस' नामक पुस्तक में वह बताते हैं कि विश्व भारतवर्ष से क्या–क्या सीख सकता है ?..... यह मैक्समूलर ही थे जिन्होंने स्थापित किया कि हिब्रू नहीं, अपितु संस्कृत विश्व की प्राचीनतम भाषा है और यूनानी या यहूदी नहीं, बल्कि हिंदू विश्व की प्राचीनतम जाति हैं।.....सर विलियम जोंस जैसे विद्वान भी इससे सहमति व्यक्त करते हुए कहते हैं, 'संस्कृत विश्व की सर्वाधिक पूर्ण भाषा है। यूनानी से भी अधिक परिपूर्ण तथा लैटिन से भी अधिक समृद्ध।.....यह भारत और उसकी संस्कृति के प्रति आकर्षण ही रहा कि उसने मैक्समूलर जैसे कई विद्वानों को प्रभावित किया। यह श्रृंखला बहुत लंबी है, जिनमें से तमाम यह मानते हैं कि गणित और विज्ञान हमने भारत से ही सीखा है। महात्मा बुद्ध के माध्यम से भारतीय विचार ईसाई मत में अभिव्यक्त हुए। इसी प्रकार ग्राम स्वराज, स्थानीय स्वशासन, लोक कल्याण और लोकतंत्र इत्यादि संकल्पनाएं सबकी गंगोत्री भारतवर्ष ही है ..... ।

–डा. विनोद कुमार तिवारी
(दै.जा. 11.09.21 से कुछ अंश)

गांधी महाराज

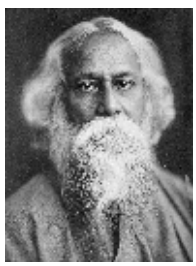

–रवींद्रनाथ टैगोर

हम गांधी जी के चेले
हों सादे या अलबेले
पर एक बात में एक सभी
निर्धन को हम न सताते
धनिकों को सिर न झुकाते
पड़ते भय से पीले न कभी।

डंडा ताने चिल्लाता
दुर्जन जब दौड़ा आता
हम उससे कहते हैं हंसकर
ये आंखें लाल तुम्हारी
होंगी बच्चों को भारी
हम निर्भय हमको क्या डर।

सीधी बातें, सीधा ढंग
उनमें न मिलावट का रंग
उलझन न चतुरता वाली है
कानूनी पेंच नहीं कुछ
झंझट उसमें न कहीं कुछ
सीधे ही कोठरी काली है।

दल बांध–बांण आए हम
घरद्वार छोड़ धाए हम
खुल गिरे हाथ से झनझन
सब जनम–जनम के बंधन
लग गई भाल पर गांधी जी की छाप
सारे कलंक धुल गए, मिटे सब पाप।

(रवींद्रनाथ टैगोर की बंगाली कविता का हिंदी अनुवाद कवित भवानी प्रसाद मिर द्वारा किया गया है।)
दैनिक जागरण–15 मार्च 2021

हिन्दी कक्ष द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित दूरभाषः EPABX 1772, 7144, 1242

मुद्रकः सागर प्रिंटर्स एंड पब्लिशर्स, नई दिल्ली। ई–मेलः sagarprinters@gmail.com